वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.383
ISBN 978-93-82071-65-5

श्री अष्टापद कैलाशगिरि परिचय एवं पूजन

–मंगल आशीर्वाद –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

–संकलनकर्त्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

सौजन्य – श्रीमती सरिता जैन ध.प. विजय कुमार जैन
पार्श्व कुंज, 117/331 एन, विजय नगर, मलदहिया, वाराणसी (उ.प्र.)
Email : vijayjain4@sify.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539, वैशाख शु. तृतीया	मूल्य
2200 प्रतियाँ	अक्षय तृतीया पर्व, 13 मई 2013	24/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का

मंगल आशीर्वाद

नमः ऋषभदेवाय, धर्मतीर्थप्रवर्तिने।
सर्वाविद्याकलायस्मादाविर्भूता महीतले।।

अनादिनिधन-शाश्वत जैनधर्म में वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने शाश्वत तीर्थ अयोध्या में जन्म लिया, प्रयाग में उन्होंने दीक्षा धारण की एवं प्रयाग में ही उन्हें दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हुई पुनः उन्होंने अष्टापद-कैलाशपर्वत से मोक्षधाम को प्राप्त किया, इस प्रकार तीन तीर्थ भगवान ऋषभदेव के पाँच कल्याणकों से पावन-पवित्र हुए हैं।

वर्तमान में कैलाशपर्वत सिद्धक्षेत्र को भारतदेश की सीमा में न मानकर चीन की सीमा में माना जा रहा है। इस यात्रा के विषय में वहाँ जाने वाले कतिपय तीर्थयात्रियों के प्रत्यक्ष अनुभव सुनकर प्रसन्नता होती है तथा यात्रा की कठिनता सुनकर शरीर रोमांचित हो जाता है।

वाराणसी निवासी विजय जैन ने अपनी ध.प. सरिता जैन व अन्य अनेक साथियों के साथ कैलाशपर्वत की यात्रा करने के उपरांत मेरे पास आकर अपने अनुभव सुनाते हुए एक पूजन की पुस्तक प्रकाशित करने की भावना व्यक्त की, इस पुस्तक में उन्होंने भगवान ऋषभदेव से संबंधित स्तोत्र, स्तुति, पूजन आदि सम्मिलित की हैं ताकि वहाँ जाने वाले तीर्थयात्री इस पुस्तक के माध्यम से भक्ति-अर्चना करके अपने कर्मों की निर्जरा कर सकें।

विजय जी व सरिता जी के लिए मेरा खूब-खूब मंगल आशीर्वाद है कि वे इसी प्रकार धर्म, तीर्थ और गुरुओं के प्रति अपनी भक्ति बनाए रखें तथा अपनी भावी पीढ़ी को भी धार्मिक संस्कार प्रदान करते रहें।

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
1.	णमोकार महामंत्र एवं चत्तारि मंगल पाठ	1
2.	दर्शन पाठ	2
3.	दर्शन स्तुति	3
4.	पूजा प्रारंभ विधि	4
7.	नवदेवता पूजन	8
5.	भगवान ऋषभदेव जिनपूजा	13
6.	श्री आदिनाथ जिनपूजा	19
8.	कैलाशपर्वत की पूजा	24
9.	अर्घावली	30
10.	शांति पाठ (हिन्दी)	37
13.	भक्तामर स्तोत्र	39
12.	निर्वाणकाण्ड (भाषा)	46
11.	श्री ऋषभदेव स्तुति	48
14.	भगवान ऋषभदेव चालीसा	49
15.	तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना	51
16.	पंचपरमेष्ठी की आरती	53
17.	पंचपरमेष्ठी एवं चौबीस तीर्थंकर की आरती	54
18.	भगवान श्री ऋषभदेव की आरती	55
19.	कैलाश पर्वत की मंगल आरती	56

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में साहित्य सृजन की अविरल धारा को प्रवाहित करके जैनधर्म की अद्‌भुत प्रभावना की है तथा जैन साहित्य जगत पर भी अनंत उपकार किये हैं। विशेषरूप से आपकी लेखनी से प्रसूत पद्य साहित्य अर्थात् पूजा-विधान से जन-जन को अमोघ शस्त्र के रूप में भक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ है।

पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य को सतत प्रकाशित करने के लिए पूज्य माताजी की ही पुण्य प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अन्तर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की भी स्थापना की गई, तब से लगातार इस ग्रंथमाला द्वारा साहित्य प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है। जहाँ इस ग्रंथमाला ने लाखों श्रावकों एवं श्रद्धालु भक्तों को ज्ञान का लाभ प्रदान किया है, वहीं विशिष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन के माध्यम से इस ग्रंथमाला को भी समाज के मध्य एक विशिष्ट ख्याति प्राप्त हुई है।

इस ग्रंथमाला से जहाँ पूज्य माताजी द्वारा टीकाकृत षट्खण्डागम जैसे महान सिद्धान्त ग्रंथों तथा नियमसार, समयसार, गोम्मटसार, अष्टसहस्री, कातंत्र व्याकरण आदि जैसे मूल आगम ग्रंथों का प्रकाशन होता है, वहीं मुख्यतः पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी व प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित विभिन्न बड़े-छोटे पूजा-मण्डल विधान आदि का प्रकाशन भी समाज के लिए विशेष मांग हेतु बना रहता है। आज हम इस ग्रंथमाला को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानते हैं, जिसके माध्यम से प्रकाशित हो रहे सत् साहित्य की वर्ष भर पूरे 365 दिन भारत के कहीं न कहीं, किसी न किसी मंदिर में मण्डल विधान या साहित्य वितरण आदि के लिए मांग आती रहती है और जैनधर्म व भक्तिमार्ग की प्रभावना में यह ग्रंथमाला नित्य ही तत्पर रहती है।

विशेषरूप से इस ग्रंथमाला द्वारा समाज को लागत मूल्य से भी कम राशि पर साहित्य उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है, जिससे कि सुविधापूर्वक जन-जन तक साहित्य पहुँच सके। आगे भी इसी प्रकार यह ग्रंथमाला अपना दायित्व निभाती रहे, यही भावना है। वर्तमान में प्रकाशित हो रही इस पुस्तक के माध्यम से आप सभी श्रावकजन विशेष धर्मलाभ को प्राप्त करें तथा जैनधर्म का यह ज्ञान आपके सम्यक्त्व को दृढ़ करने में सदा सहकारी बनकर मोक्षमार्ग को प्रशस्त करे, सभी भक्तों को मेरी यही शुभकामनाएं एवं मंगल आशीर्वाद है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

भगवान ऋषभदेव ने आज से करोड़ों-करोड़ों वर्ष पूर्व अयोध्या नगरी में जन्म लिया और अष्टापद-कैलाशपर्वत से मोक्षधाम को प्राप्त किया। वर्तमान में ऐसा माना जा रहा है कि वह कैलाशपर्वत अपने भारतदेश में न होकर चीन-तिब्बत की सीमा में है। प्रस्तुत पुस्तक "श्री अष्टापद कैलाशगिरि पूजन" विशेषरूप से वहाँ जाने वाले जैनधर्मावलम्बियों द्वारा भगवान ऋषभदेव एवं कैलाशगिरि की पूजा-अर्चना के उद्देश्य से तैयार की गई है।

इस प्रसंग में भगवान ऋषभदेव के संक्षिप्त जीवनदर्शन को भी जानना अति आवश्यक है-जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने चैत्र कृ. नवमी को अयोध्या नगरी में जन्म लिया। उनके पिता का नाम महाराजा नाभिराज और माता का नाम महारानी मरुदेवी था। युवावस्था में भगवान ऋषभदेव का विवाह राजा कच्छ-महाकच्छ की बहनों-यशस्वती और सुनन्दा के साथ सम्पन्न हुआ। क्रम-क्रम से महारानी यशस्वती ने भरत आदि सौ पुत्र एवं ब्राह्मी नाम की एक कन्या को जन्म दिया तथा महारानी सुनन्दा के द्वारा पुत्र बाहुबली एवं सुन्दरी नाम की पुत्री का जन्म हुआ।

भगवान ऋषभदेव ने सर्वप्रथम प्रजा को असि-मसि-कृषि-विद्या-वाणिज्य और शिल्प इन षट्क्रियाओं का उपदेश देकर उन्हें जीवन जीने की कला सिखाई। भरत-बाहुबली आदि सभी 101 पुत्रों को स्वयं आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव ने समस्त विद्याओं-कलाओं में पारंगत किया तथा ब्राह्मी-सुन्दरी कन्याओं को क्रमशः अक्षरविद्या एवं अंकविद्या सिखाकर नारी शिक्षा का प्रारंभीकरण किया।

इस प्रकार राज्य-वैभव का उपभोग करते हुए भगवान का सुखमय जीवन व्यतीत हो रहा था। एक दिन भगवान ऋषभदेव की राज्यसभा में नीलांजना नाम की अप्सरा नृत्य करते-करते मृत्यु को प्राप्त हो गई, यद्यपि इन्द्र ने रसभंग के भय से उसी समय दूसरी नीलांजना उपस्थित कर दी परन्तु भगवान संसार की असारता को समझ गए और उन्होंने वैराग्य भावों से ओत-प्रोत होकर प्रयाग (इलाहाबाद) में जाकर चैत्र कृ. नवमी के ही दिन वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली तथा वहीं प्रयाग में कालान्तर में फाल्गुन कृ. एकादशी के दिन उन्हें दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति भी हुई पुनः सम्पूर्ण जगत् के प्राणियों को

दिव्यध्वनि का पान कराते हुए भगवान की आयु के जब चौदह दिन शेष रहे, तब उन्होंने कैलाशपर्वत पर जाकर योगनिरोध कर लिया और माघ कृ. चतुर्दशी के दिन उन्हें निर्वाणधाम की प्राप्ति हो गई।

इन भगवान ऋषभदेव को आदिब्रह्मा, पुरुदेव, युगादिपुरुष, युगस्रष्टा, युगादिब्रह्मा, युगपुरुष आदि अनेकानेक नामों से जाना जाता है।

ऐसे भगवान ऋषभदेव की निर्वाणस्थली के रूप में स्थित "कैलाशपर्वत" का दर्शन-वंदन यद्यपि साधारण जनता के लिए अनुपलब्ध है तथापि कुछ भक्तगण आज भी उस कठिन यात्रा को करके पुण्यार्जन करते हैं इसी शृँखला में वाराणसी निवासी श्री विजय कुमार जैन और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरिता जैन भी कुछ साथियों के साथ वहाँ के दर्शन करके प्रसन्नचित्त हुए। श्री विजय जी की भावनानुसार इस पुस्तक का प्रकाशन वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला द्वारा किया जा रहा है। इस पुस्तक के माध्यम से सभी तीर्थयात्री पूजा-अर्चना करने के साथ-साथ तीर्थ और तीर्थंकर के इतिहास से भी परिचित हों, यही पुस्तक प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य है।

इस पुस्तक में सर्वप्रथम महामंत्र णमोकार एवं चत्तारिमंगल पाठ से शुभारंभ किया गया है पुनः भगवान के दर्शन के समय पढ़ा जाने वाला दर्शन पाठ संस्कृत में है, जो संस्कृत पढ़ने में कठिनाई महसूस करते हैं वे हिन्दी की स्तुति "प्रभु पतित पावन.....पढ़ें पुनः पूजा प्रारंभ विधि पढ़कर नवदेवता, भगवान ऋषभदेव आदि पूजन करें पुनः अर्घावली, शांतिपाठ विसर्जन के पश्चात् भक्तामर स्तोत्र प्रकाशित है इसे पढ़कर भगवान ऋषभदेव का गुणानुवाद करें।

इसके बाद प्रकाशित पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित भगवान ऋषभदेव स्तुति को पढ़कर भगवान के जीवनदर्शन से परिचित हों पुनः भगवान ऋषभदेव चालीसा, तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना आदि पाठ पढ़ें। इसमें निर्वाणकाण्ड प्रकाशित है जिसे पढ़कर शायद आप सोच रहे होंगे कि इसमें निर्वाणकाण्ड की क्या आवश्यकता थी ? तो आपको जानना है कि चूँकि कैलाशपर्वत भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि है अतः वहाँ जाकर भगवान ऋषभदेव की पूजन करके जयमाला से पूर्व निर्वाणकाण्ड पढ़कर निर्वाणलाडू चढ़ाएं, लाडू अपने घर से बनाकर ले जाएँ। इसके बाद मंगल आरती करें अथवा समयानुसार और भी पूजन आदि कर सकते हैं।

इस प्रकार भगवान ऋषभदेव एवं निर्वाणक्षेत्र कैलाशपर्वत की वंदना-भक्ति आपके जीवन में मंगलकारी हो, यही तीर्थयात्रा का वास्तविक सुफल है।

अष्टापद-कैलाश तीर्थ

-विजय कुमार जैन, वाराणसी (उ.प्र.)

अष्टापद कैलाश तीर्थ प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की मोक्षस्थली के रूप में जैन धर्मावलम्बियों द्वारा पूजनीय है। यह तीर्थ आजकल चीन द्वारा शासित तिब्बत प्रदेश में स्थित है। हम लोग 12 जुलाई 2010 को अष्टापद कैलाश पर्वत की तलहटी (डारचेन) पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर पता चला कि अष्टापद एवं कैलाशपर्वत दो अलग-अलग पर्वत हैं, जो एक-दूसरे के बिल्कुल समीप हैं। हमारे टूर गाइड द्वारा बताया गया कि कैलाशपर्वत के बगल में स्थित पर्वत ही अष्टापद पर्वत के नाम से विख्यात है। फोटो में देखें, तो अगल-बगल होते हुए भी सिर्फ कैलाशपर्वत ही बर्फ से ढका हुआ है। अष्टापद पर बर्फ बिल्कुल नहीं है। वहाँ से लौटने के पश्चात् इस टूर की चर्चा जब श्री सत्येन्द्र मोहन जैन जी से हुई तो उन्होंने बताया कि दिगम्बर जैन महासमिति की पत्रिका 1-15 फरवरी 2000 के अंक में क्षुल्लक मोतीसागर जी का एक लेख छपा था, जिसकी फोटो कापी उन्होंने मुझे दी। उसके अनुसार कुछ जैन यात्री पहले गये थे। तो उनको वहाँ के गाइड ने बताया कि डारचेन से लगभग 3 घंटे की यात्रा के बाद अष्टापद पर्वत है, जहाँ कोई जैन साधु साधना करते थे, फिर एक दिन आठ सीढ़ी चढ़कर लोप हो गये, ऐसा वहाँ उस गाइड के दादा जी बताते थे। वहाँ लगभग 150-200 वर्ष पहले तक जैन मंदिर थे, जिनमें जैन यात्री आकर दर्शन करते थे। बाद में सब मंदिर ध्वस्त हो गये और उनकी मूर्तियाँ भारत ले गये। इस बात को पढ़ने के बाद मैंने अपने टूर आपरेटर नामराज जोशी को मुम्बई फोन करके पूछा, तो उन्होंने बताया कि हाँ गुफा है। पर दूरी ज्यादा होने के कारण हम लोगों को नहीं बताया एवं वहाँ तक पैदल ही जाया जाता है।

इस प्रकार हम लोग गुफा के दर्शन से वंचित रह गये। जिसका मुझे बहुत अफसोस है और यह जानकारी नहीं होने के कारण हुआ। अगर जाने के पहले श्री सत्येन्द्र मोहन जी से चर्चा हुई होती तो गुफा तक जरूर जाते।

बनारस से चलने के पहले टूर आपरेटर द्वारा जो बुकलेट भेजी गई थी, उसमें बुद्ध भगवान का एक मंदिर पद्मसंभव का उल्लेख था। मेरा मन कहने लगा कि यह मंदिर बद्रीनाथ व बालाजी की तरह ही जैन मंदिर निकलना चाहिए। इसीलिए मैंने पूरी पूजन-नित्यपूजन, आदिनाथ स्वामी स्तोत्र, आदिनाथ स्वामी पूजन, निर्वाणकाण्ड, कैलाशपर्वत पूजन, अर्घावली, महार्घ, शांतिपाठ एवं भक्तामर स्तोत्र सहित कम्प्यूटर पर टाइप कराकर स्पाइरल बाइण्डिंग द्वारा पुस्तक के रूप में 20 प्रति बनवा ली थी। यह पुस्तक यात्रा में अष्टापद कैलाशपर्वत की पूजन में काम आई तथा जब पद्मसंभव

मंदिर पहुँचे, तो सामने साक्षात् आदिनाथ भगवान की पद्मासन मूर्ति देखकर इतनी प्रसन्नता हुई, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

मंदिर थोड़ी चढ़ाई पर है, सो मुझसे पहले मेरी पत्नी सरिता जैन पहुँच गई थी। उन्होंने मूर्ति देखते ही पुजारी द्वारा पद्मासन होने की बात निश्चित करने पर हाथ में लिया 'सेव' फल भगवान को चढ़ाया। फिर पुजारी से स्वीकृति लेकर हम लोगों ने पूरी पूजा (लगभग एक घंटे तक) किया, आरती भी किया। पुजारी ने मेरी डायरी में भगवान की जो मुद्रा बनाई, जो चिन्ह का स्थान बनाया, वैसा ही अपनी दिगम्बर तीर्थंकर मूर्तियों में होता है। इस प्रकार एक जैन मंदिर वहाँ पर आज भी मौजूद है।

इस प्रकार भगवान आदिनाथ की निर्वाणस्थली के दर्शन करने के पश्चात् निम्न प्रश्न उठते हैं, जिनका उत्तर शोध का विषय है-

1. अष्टापद एवं कैलाश दो भिन्न-भिन्न पर्वत हैं, जबकि पूजाओं में कहीं अष्टापद एवं कहीं कैलाशपर्वत से भगवान आदिनाथ का निर्वाण लिखा है। तो कौन सा पहाड़ भगवान की निर्वाणस्थली है। हाल में अष्टापद बद्रीनाथ को भगवान आदिनाथ की निर्वाणस्थली मान लिया गया है, इस प्रकार तो अष्टापद पर्वत को भगवान आदिनाथ की निर्वाणस्थली माना जाए या कैलाशपर्वत को ?

2. पद्मसंभव मंदिर के बारे में अधिक से अधिक जानकारी जुटाई जाए तथा वहाँ की मूर्ति को वस्त्रालंकार हटवाकर देखने की कोशिश हो, ताकि उसके बारे में समस्त जैन धर्मावलम्बियों को पता चल सके कि मूर्ति का इतिहास क्या है ?

3. जैन समाज के जो भी लोग पहले अष्टापद कैलाश के दर्शन कर चुके हैं, उनसे भी ज्यादा से ज्यादा जानकारी एकत्रित की जाए ताकि उस निर्वाणक्षेत्र के उत्थान की रूपरेखा तैयार हो सके।

इस बारे में समाज द्वारा किए जाने वाले प्रयास में मेरा पूर्ण सहयोग सदैव रहेगा एवं जो जानकारी प्राप्त हो, उसे मुझे भी संज्ञान में देने की कृपा हो, ऐसा मेरा समाज से निवेदन है।

जैन समाज वाराणसी से सर्वप्रथम मैं और मेरी पत्नी द्वारा अष्टापद कैलाश यात्रा करने के कारण श्री दिगम्बर जैन समाज एवं जैन युवा संगठन-वाराणसी द्वारा हम लोगों को **'आदिवीर''** एवं **''आदिवीरांगना''** की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस प्रकार की उपाधि भारत के सभी जैन यात्रियों को दिया जाना चाहिए।

कैलाश पर्वत यात्रा का वृत्तान्त

-विजय कुमार जैन, वाराणसी (उ.प्र.)

जैन गजट के माध्यम से प्रचारित श्री जमनालाल हंपावत, मुम्बई द्वारा 26 जैन सदस्यों का जैन ग्रुप प्रथम बार अष्टापद कैलाश मानसरोवर यात्रा पर गया। ग्रुप के सभी सदस्योंको 5 जुलाई को काठमांडू अपनी व्यवस्था द्वारा पहुँचना था। यह टूर लेजर पोर्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित था, जिसके संचालक श्री जमनालाल जी थे तथा 5 जुलाई को काठमांडू पहुँचना एवं 20 जुलाई को काठमांडू से वापसी की व्यवस्था थी। हम लोग 6 जुलाई को काठमांडू पहुँचे क्योंकि 5 जुलाई को बनारस से काठमांडू की एयर इण्डिया की उड़ान नहीं थी।

6 जुलाई 2010, वाराणसी से मध्यान्ह 12.20 बजे एयर इण्डिया की फ्लाइट से 1.20 पी.एम. पर काठमांडू पहुँचे। काठमांडू एयरपोर्ट पर श्री राजीव उपाध्याय ने हम लोगों का स्वागत किया एवं कार द्वारा जैन धर्मशाला के भोजनालय में खाना खिलाकर 5 सितारा होटल एवरेस्ट ले गये। यहाँ हम लोगों को बड़े-बड़े 2 एयर बैग दिये गये, जिसमें अपना सारा समान रख दिया गया तथा अटैची होटल के क्लाकरूप में जमा हो गई। बैग पर नम्बर पड़े थे जो बैग की पहचान थी। 4.30 बजे होटल से एक बस द्वारा काठमांडू से 40 किमी. दूर धूलिखेल नामक जगह पर लेगये एवं वहाँ एक रिसोट में रुके। जगह बहुत सुन्दर, साफ-सुथरी एवं प्राकृतिक वातावरण से भरपूर थी।

7 जुलाई 2010, सुबह 8 बजे होटल से चले, 12 बजे नेपाल बार्डर कोडारी पहुँचे। बार्डर पैदल पार करके चाइना में घुसे। वहाँ टोयटा की लैंड क्रूजर गाड़ियों में 4 सवारी प्रति गाड़ी के हिसाब से बैठ गये। ग्रुप कुल 7 गाड़ी एवं एक कन्टेनर वाली ट्रक (सामान वास्ते) द्वारा आगे चला लगभग एक घंटे बाद झांगमू में एक होटल में लंच लिया गया। संध्या 5 बजे के करीब नायलम पहुँचे। जहाँ एक होटल में रुके। एक कमरे में चार पलंग पड़े थे। कमरे की साइज के हिसाब से सिर्फ दो पलंग होने चाहिए थे। सामान रखने में भी दिक्कत हुई। यहाँ 8 तारीख को रुके। यह स्थान लगभग 12800 फिट (समुद्र तल से) की ऊँचाई पर है। यहाँ दो दिन रोकते हैं ताकि यात्री कम आक्सीजन एवं वातावरण से अभ्यस्त हो जाये।

9 जुलाई प्रातः 6 बजे चाय बिस्कट लेकर चल दिये। 2 बजे हम लोग सागा 230 किमी 15800 फुट पहुंच गये। यहाँ 3 स्टार होटल 'सागा होटल' में ठहराया गया, जिसमें दो बेड के रूम थे गर्म पानी व बाथरूम की सुविधा अच्छी थी, पर गर्म पानी शाम को 6 बजे से चालू हुआ, तभी नहाया जा सका।

10 जुलाई, सागा से रात्रि 12 बजे चलकर रोम्बा होते हुए दिन में 11.30 बजे पारयांग पहुँचे। रास्ता पथरीला था, कई छोटी-छोटी नदियों के अंदर से गाड़ी निकली।

11 जुलाई को सुबह सात बजे चाय, बिस्कट लेकर हम लोग मानसरोवर के लिए चले। 3 बजे शाम को 270 किमी. का सफर करके जगप्रसिद्ध मानसरोवर झील के किनारे पहुँच गये (15000 फुट ऊँचाई पर) सभी ने झील में स्नान किया, मौसम साफ था। यहाँ से कैलाश पर्वत के भी दर्शन हुए। यहाँ सभी मानसरोवर झील से लगभग 200 मीटर की दूरी पर बने टेंट में रुके। एक टेंट में 8 बिस्तर लगे थे। लाईट की व्यवस्था नहीं के बराबर थी। हमारे टेंट की लाइट एक घंटे में ही बुझ गई।

12 जुलाई, मानसरोवर से सुबह 6 बजे चाय पीकर चले, झील का लगभग तीन चौथाई चक्कर लगाते हुए रास्ते में राक्षस ताल देखते हुए 11 बजे करीब डारचेन (कैलाशपर्वत की तलहटी) पहुँच गये। यहाँ भी एक कमरे में 4 यात्रियों की व्यवस्था थी। 12 तारीख को ही अष्टापद के दर्शन किये। अष्टापद जाने के पहले रास्ता बंद मिला, सभी वापस लौट आये। होटल में फिर सबने णमोकार मंत्र का जाप किया, एक घंटे बाद सूचना मिली कि रास्ता खुल गया, सब लोग गाड़ियों में सवार होकर तुरंत चले गये। हमने भावपूर्वक पूरी पूजन की।

13 जुलाई, जिनको परिक्रमा करने जाना था, वो परिक्रमा की तैयारी करके चले। हमने परिक्रमा न करके पद्मसंभव मंदिर के दर्शन किए। परिक्रमा एवं पद्मसंभव मंदिर के पहले हमें 'यमद्वार' दिखाया गया। यहाँ हमने यमद्वार की तीन प्रदक्षिणा की। यमद्वार से आगे एक पहाड़ी पर पद्मसंभव मंदिर है। तलहटी में घोड़े वाले एवं पिट्ठू यात्रियों का इंतजार करते रहते हैं। जो परिक्रमा के लिए चले गये वे मंदिर के दर्शन से वंचित हो गये। पद्मसंभव मंदिर में दर्शन करके भगवान आदिनाथ की प्रतिमा को देखकर मन इतना प्रसन्न हो गया कि रास्ते की थकान पल भर में दूर हो गई। हमने भगवान की कई तस्वीरें खींची। हम लोगों की ग्रुप फोटो पुजारी जी ने खींची।

इसके बाद हम लोग वापस होटल आ गये। लौटते समय भगवान ने आशीर्वाद स्वरूप हम लोगों पर बर्फ के छोटे-छोटे दाने लगभग 5 मिनट के लिए बरसाए।

14 जुलाई, इस दिन श्री जमनालाल जी द्वारा दोबारा अष्टापद पर्वत के दर्शन-पूजन का प्रोग्राम बनाया गया, जहाँ हम लोग जाकर दुबारा पूजन किया।

15 जुलाई, परिक्रमा से यात्री वापस आये। उनका स्वागत हुआ। संध्या को कैलाशपर्वत की भावपूर्वक कर्पूर जलाकर आरती हुई। इसके साथ नृत्य व भजन भी हुआ।

15 जुलाई की रात्रि 1.30 बजे हम लोग वापस चले। रातभर एवं दिनभर चलकर शाम के 4 बजे रोम्बा पहुँचे। यहाँ पहुँचने के बाद बहुत तेज बारिश हुई। इसके बाद भोजन व विश्राम। यहाँ एक कमरे में 8 पलंग थे। कमरे व पलंग के हिसाब से होटल में रुकने की व्यवस्था लगभग 200 लोगों की थी।

17 जुलाई, सुबह 4 बजे चाय पीकर रोम्बा से चले। 9.30 बजे सांगा पहुँचे। इस बार डबल बेड के कमरों में 2 बिस्तर जमीन पर लगाकर 4 यात्रियों को एक कमरे में ठहराया गया। गर्म पानी शाम को 6 बजे ही मिला।

18 जुलाई, सागा से 10 बजे चलकर एक बजे फेकू लेक/पर्वत के किनारे ड्राइवरों ने नाश्ता किया। हम लोग 5 बजे नायलम पहुँचे।

19 जुलाई, सुबह 6 बजे चलकर 7.30 बजे बार्डर पहुँच गये। बार्डर पार करके 9 बजे नेपाल कोथारी में नाश्ता करके 10.30 पर एवरेस्ट होटल काठमांडू पहुँच गये।

नेपाल पारकर तिब्बत में झांगमू से थोड़ा आगे चलने पर बहुत जोर की बारिश मिली। नायलम से कुछ दूरी के बाद पठारी इलाका शुरू हो गया। हरियाली सिर्फ नायलम से आगे 15-20 किमी. तक थी। इसके बाद पूरे रास्ते सिर्फ बालू, पत्थर, नदियाँ मिलीं। हरियाली कहीं देखने को नहीं थी। कैलाशपर्वत क्षेत्र भी हरियाली रहित ही था। हवा में ठंडक काफी थी तथा वेग भी था। वैसे दिन में अच्छी धूप मिलती थी। कुल मिलाकर मौसम सुहावना ही कहा जायेगा। कैलाशपर्वत क्षेत्र अतिशययुक्त है। इसका अनुभव भी ग्रुप के लोगों को हुआ।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। **नाम**—क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएँ एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण–जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा–हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?–भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यीय बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारीबावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॅनाट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–जिया बेकरार है......

ऊँचा सा पहाड़ है, अष्टापद गिरिराज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।। टेक.।।

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, तीर्थंकर प्रभु प्रथम हुए।। तीर्थंकर......
राजपाट सब त्याग वनों में, जाकर मुनिवर प्रथम हुए।। जाकर......
मन में हुआ विचार है, नश्वर सब संसार है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।1।।

चौदह दिन की आयु रही जब, अष्टापद पर पहुँच गए। अष्टापद......
योग निरोधा कर्म नष्ट कर, सिद्धालय को प्राप्त हुए।। सिद्धालय......
सुख का वह साम्राज्य है, तीन लोक सरताज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।2।।

आओ खोज करें उस गिरि की, कहाँ आज वह लुप्त हुआ।। कहाँ......
चक्रवर्ती भरतेश्वर ने जहाँ, रत्नमूर्ति निर्माण किया।। जहाँ......
कहते ग्रन्थ पुराण हैं, इतिहासों में नाम है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।3।।

मिली प्रेरणा ज्ञानमती की, जय जय का स्वर गूँज उठा।। जय जय......
दीप 'चंदनामती' असंख्यों, लेकर भक्तसमूह चला।। लेकर......
देखो कैसा ठाठ है, सुन्दर पर्वतराज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।4।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-माई रे माई.......

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, मिलकर सभी मनाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।

कोड़ा-कोड़ी वर्ष पूर्व तिथि माघ कृष्ण चौदश थी।
अष्टापद से मोक्ष पधारे, ऋषभदेव जिनवर जी।।
तब स्वर्गों से इन्द्रों ने आ, दीप असंख्य जलाए।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।1।।

ऋषभदेव से महावीर तक, हैं चौबिस तीर्थंकर।
इन सबका उपदेश एक ही, धर्म अहिंसा हितकर।।
जिओ और जीने दो सबको, यह संदेश सुनाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।2।।

सिद्धक्षेत्र की भक्ती करके, हम भी सिद्ध बनेंगे।
जब तक सिद्ध नहीं बनते, तब तक प्रभु भक्ति करेंगे।।
सभी 'चन्दनामती' खुशी से, यही भावना भाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।1।।

ॐ जय जय जय

नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच-णमोयारो सव्व-पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।

दर्शन पाठ

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्।।1।।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्।।2।।

वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मराग-सम-प्रभं।
जन्म-जन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति।।3।।

दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसार-ध्वान्त-नाशनं।
बोधनं चित्त-पद्मस्य, समस्तार्थ-प्रकाशनम्।।4।।

दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम्।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधे।।5।।

जीवादि-तत्त्व-प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणार्णवाय।
प्रशांत-रूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय।।6।।

चिदानन्दैक-रूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्म-प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः।।7।।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्य-भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।8।।

न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।9।।

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवे भवे।।10।।

जिनधर्म-विनिर्मुक्तो, माभवं चक्रवर्त्यपि।
स्वाच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि, जिनधर्मानुवासितः।।11।।

जन्म-जन्मकृतं पापं, जन्म-कोटिमुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात्।।12।।

अद्याभवत्सफलता नयन-द्वयस्य, देव त्वदीय-चरणांबुज-वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलकप्रतिभासते मे, संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणम्।।13।।

।। इति दर्शन पाठं।।

दर्शन स्तुति

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरन आयो सरन जी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरन जी।।1।।
तुम ना पिछान्या आन मान्या, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जाण्यो, भ्रम गिण्यो हितकार जी।।2।।
भव विकट बन में करम वैरी, ज्ञानधन मेरो हर्‌यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो।।3।।
धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभु जी को लख लयो।।4।।
छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरै।
वसु प्रातिहार्य अनंत गुण जुत, कोटि रवि छबि को हरैं।।5।।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रङ्क चिन्तामणि लयो।।6।।
मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, वीनऊँ तुव चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन तरण जी।।7।।
जाचूँ नहीं सुरवास पुनि, नर-राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाचहूँ तुव भक्ति भव भव, दीजिये शिवनाथजी।।8।।

पूजा प्रारंभ विधि

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं—अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।
अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।
एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनं।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।2।।

ॐ ह्रीं अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

(यदि अवकाश हो, तो यहाँ पर सहस्रनाम पढ़कर दस अर्घ्य देना चाहिए। नहीं तो आगे लिखा श्लोक पढ़कर अर्घ्य चढ़ाना चाहिए।)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतु-
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाऽभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति-प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंव्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।4।।

अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान् के नाम के पश्चात् पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्रस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नित्याप्रकंपाद्भुत्-केवलौघाः स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए)।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नमः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा-दास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणा समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।4।।
जंघावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनोः गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथा प्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।8।।
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषा दृष्टिविषं विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।10।।

।।इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं।।

नवदेवता पूजन

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

-गीता छन्द-

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नवदेवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथाष्टक-

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतू, पुंज नव सुचढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नवदेवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य- **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।** (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

-सोरठा-

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति......)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनी पियूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

-दोहा-

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीता छंद-

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।।इत्याशीर्वादः।।

भगवान ऋषभदेव जिनपूजा

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

स्थापना– गीता छंद

हे आदिब्रह्मा! युगपुरुष! पुरुदेव! युगस्रष्टा तुम्हीं।
युग आदि में इस कर्मभूमी, के प्रभो! कर्ता तुम्हीं।।
तुम ही प्रजापतिनाथ! मुक्ती, के विधाता हो तुम्हीं।
मैं आपका आह्वान करता, नाथ! अब तिष्ठो यहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –चाल –नंदीश्वर पूजा

जिनवच सम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
जिन चरणांबुज में धार, दे जगद्वंद्व हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनतनु सम सुरभित गंध, सुवरण पात्र भरूँ।
जिनचरण सरोरुह चर्च, भव संताप हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन गुणसम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरे।
जिन चरण निकट धर पुंज, अक्षय सौख्य भरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनयशसम सुरभित श्वेत, कुंद गुलाब लिये।
मदनारिजयी जिनपाद, पूजूँ हर्ष हिये।।

श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवचनामृत सम शुद्ध, व्यंजन थाल भरे।
परमामृत तृप्त जिनेन्द्र, पूजत भूख टरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरभेद ज्ञान सम ज्योति,जगमग दीप लिये।
जिनपद पूजत ही होत, ज्ञान उद्योत हिये।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरे।
निज आतम गुण सौगंध्य, दश दिश माहिं भरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ध्वनिसम मधुर रसाल, आम अनार भले।
जिनपद पूजत तत्काल, फल सर्वोच्च मिले।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, अर्घ समर्प्य किया।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

सरयूनदी सुनीर, जिनपद पंकज धार दे।
शीघ्र हरो भव पीर, शांतीधारा शांतिकर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
आदीश्वर पादाब्ज, पूजत ही सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंच कल्याणक अर्घ

–शंभु छंद–

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरुदेवी के आँगन, बहु रत्न वृष्टि की धनदराज।।
आषाढ़ वदी द्वितीया सर्वारथ, सिद्धी से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु मात सेव।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां श्रीआदिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके, माता की अतिशय तृप्ती की।।
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर, मेरू पर अतिशय न्हवन किया।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीआदिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव निलांजना नृत्य देख, वैराग्यभाव मन में लाये।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, सुर सुदर्शना पालकि लाये।।
नक्षत्र उत्तराषाढ़ चैत वदि, नवमी प्रभु सिद्धार्थ वन में।
छह मास योग ले दीक्षा ली, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीआदिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह मास योग के बाद प्रभू, मुनिचर्या बतलाने निकले।
गजपुर में अक्षयतृतिया को, आहार दिया श्रेयांस मिले।।
इक सहस वर्ष तप तपने से, केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा, फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीआदिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह विध सभा बनी सुंदर, मुनि आर्या सुरनर पशु गण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन, आदिक चौरासी गणधर थे।।
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध, अरु मासशेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ, वदि चौदश के प्रभु मुक्ति बसे।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीआदिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–दोहा–

तीर्थंकर गुण रत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।1।।

–शंभु छंद–

श्री वृषभसेन आदिक चौरासी, गणधर मुनि चौरासि सहस।
ब्राह्मी गणिनी त्रय लाख पचास, हजार आर्यिका व्रतसंयुत।।
त्रय लाख सुश्रावक पाँच लाख, श्राविका प्रभू का चउ संघ था।
आयू चौरासी लाख पूर्व, वत्सर व पाँच सौ धनु तनु था।।2।।

– अनंग शेखर छंद–

जयो जिनेन्द्र! आपके महान दिव्य ज्ञान में,
त्रिलोक और त्रिकाल एक साथ भासते रहे।

जयो जिनेन्द्र! आपका अपूर्व तेज देखके,
असंख्य सूर्य और चंद्रमा भि लाजते रहे।।
जयो जिनेन्द्र! आपकी ध्वनी अनच्छरी खिरे,
तथापि संख्य भाषियों को बोध है करा रही।
जयो जिनेन्द्र! आपका अचिन्त्य ये महात्म्य देख,
सुभक्ति से प्रजा समस्त आप आप आ रही।।3।।

जिनेश! आपकी सभा असंख्य जीव से भरी,
अनंत वैभवों समेत भव्य चित्त मोहती।
जिनेश! आपके समीप साधु वृंद औ गणीन्द्र,
केवली मुनीन्द्र और आर्यिकायें शोभतीं।।
सुरेन्द्र देवियों की टोलियाँ असंख्य आ रही,
खगेश्वरों की पक्तियाँ अनेक गीत गा रहीं।
सुभूमि गोचरी मनुष्य नारियाँ तमाम हैं,
पशू तथैव पक्षियों कि टोलियाँ भी आ रहीं।।4।।

सुबारहों सभा स्वकीय ही स्वकीय में रहें,
असंख्य भव्य बैठ के जिनेश देशना सुनें।
सुतत्त्व सात नौ पदार्थ पाँच अस्तिकाय और,
द्रव्य छह स्वरूप को भले प्रकार से गुनें।।
निजात्म तत्त्व को संभाल तीन रत्न से निहाल,
बार-बार भक्ति से मुनीश हाथ जोड़ते।
अनंत सौख्य में निमित्त आपको विचार के,
अनंत दुःख हेतु जान कर्मबंध तोड़ते।।5।।

स्वमोह बेल को उखाड़ मृत्युमल्ल को पछाड़,
मुक्ति अंगना निमित्त लोक शीश जा बसें।
प्रसाद से हि आपके अनंत भव्य जीव राशि,
आपके समान होय आप पास आ लसें।।

असंख्य जीव मात्र दृष्टि समीचीन पायके,
अनंतकाल रूप पंच परावर्त मेटते।
सुभक्ति के प्रभाव से असंख्य कर्म निर्जरा,
करें अनंत शुद्धि से निजात्म सौख्य सेवते।।6।।

–दोहा–

वृषभ चिह्न स्वर्णिम तनू, प्रथम तीर्थंकर आप।
'ज्ञानमती' सुख शांति दे, करो हमें निष्पाप।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–दोहा–

नाथ! आप गुणसिंधु हैं, को कहि पावे पार।
नाममंत्र ही आपका, करे भवोदधि पार।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

श्री आदिनाथ जिनपूजा

नाभिराय मरुदेवि के नंदन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वारथसिद्धि तैं आप पधारे, मध्यम लोक मांहि जिनराज।।
इंद्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिल करके, अपने कर पूजें प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अष्टक-

क्षीरोदधि को उज्ज्वल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन दाह निकंदन, कंचन झारी में भर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, भवआताप तुरत मिट जाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभशालि अखंडित सौरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, अक्षय पद को तुरत उपाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी बेल चमेली, श्रीगुलाब के पुष्प मँगाय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, कामबाण तुरत नसिजाय।।

श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज लीना तुरत रस भीना, श्रीजिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊँ क्षुधा नसाऊँ, जिन गुण गावत मन हरषाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग जगमग होत दशोंदिस, ज्योति रही मंदिर में छाय।
श्रीजी के सन्मुख करत आरती, मोह तिमिर नासे दुखदाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर कपूर सुगंध मनोहर, चंदन कूट सुगंध मिलाय।
श्रीजी के सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरे चहुँगति मिटजाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल और बादाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय।
महामोक्षफल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।

श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

-दोहा-

सर्वारथ सिद्धि तैं चये, मरुदेवी उर आय।
दोज असित आषाढ़ की, जजूँ तिहारे पाय।।

ॐ ह्रीं आषाढ़-कृष्ण-द्वितीयायां गर्भ-कल्याणक-प्राप्ताय श्री आदिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी नवमी दिना, जन्म्यां श्री भगवान।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजों धरि ध्यान।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृणवत् ऋधि सब छांडिके, तप धार्यो वन जाय।
नवमी चैत्र असेत की, जजूँ तिहारे पाय।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों यह थान।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ चतुर्दशि कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान्।
भवि जीवों को बोधिके, पहुँचे शिवपुर थान।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदीश्वर महाराज, मैं विनती तुम से करूँ,
चारों गति में मांहि, मैं दुख पायो सो सुनो।
अष्ट कर्म मैं एकलो, यह दुष्ट महादुख देत हो,
कबहूं इतर निगोद में मोकूँ पटकत करत अचेतहो।।
म्हारी दीनतणी सुन वीनती।।1।।

प्रभु कबहुँक पटक्यो नरक में, जठे जीव महादुख पाय हो।
निष्ठुर निरदई नारकी, जठे करत परस्पर घात हो।।म्हारी.।।2।।

प्रभु नरकतणा दुख अब कहूँ जठे करत परस्पर घात हो।
कोइयक बांध्यो खंभस्यों पापी दे मुद्गर की मार हो।।
कोइयक कोटैं करोंतरसो, पापी अंगतणी दोय फाड़ हो।।म्हारी.।।3।।

प्रभु इहविधि दुख भुगत्या घणां, फिर गति पाई तिरियंच हो।
हिरणा बकरा बाछला पशु दीन गरीब अनाथ हो।
पकड़ कसाई जाल में, पापी काट काट तन खाय हो।।म्हारी.।।4।।

प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, जापै लादियो भार अपार हो।
नहीं चाल्यो जठे फिर पर्यो, पापी दे सोटन की मार हो।।म्हारी.।।5।।

प्रभु कोइयक पुण्य संयोग सूँ मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो।
देवांगना संग रमि रह्यौ जठे भोगनि को परकास हो।।म्हारी.।।6।।

प्रभु संग अप्सरा रमि रह्यो कर कर अति अनुराग हो।
कबहुँक नंदन वनविषै, प्रभु कबहुँक वनगृह माहिं हो।।म्हारी.।।7।।

प्रभु यह विधि काल गमायके, फिर माला गई मुरझाय हो।
देव थिति सब घट गई फिर उपज्यो सोच अपार हो।।
सोच करंता तन फिर पड़्यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय हो।।म्हारी.।।8।।

प्रभु गर्भतणा दुख अब कहूँ, जठे सकुड़ाई की ठौर हो।
हलन चलन नहिं करसक्यो जठे सघन कीच घनघोर हो।।म्हारी.।।9।।

माता खावे चरपरो फिर लगे तन संताप हो।
प्रभु जो जननी तातो भखै, फेर उपजै तन संताप हो।।म्हारी.।।10।।

औंधे मुख झूलो रह्यो फेर निकसन कौन उपाय हौ।
कठिन कठिन कर नीसरो, जैसे निसरै जंत्री में तार हो।।म्हारी.।।11।।

प्रभु फिर निकसत ही धरत्यां पड़्यो फिर लागी भूख अपार हो।
रोय-रोय बिलख्यो घणो, दुख वेदन को नहिं पार हो।।म्हारी.।।12।।

प्रभु दुख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूँ तिहारे पांय हौ।
सेवक अर्ज करै प्रभु, मोकूँ भवोदधि पार उतार हो।।म्हारी.।।13।।

-दोहा-

श्रीजी की महिमा अगम है, कोई न पावै पार।
मैं मति अल्प अज्ञान हूँ, कौन करे विस्तार।।

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनती ऋषभ जिनेशकी, जो पढसी मन ल्याय।
सुरगों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय।।

।।इत्याशीर्वादः।।

कैलाशपर्वत की पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –आओ बच्चों..........

चलो सभी मिल पूजन कर लें, गिरि कैलाश महान की।
प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के, प्रथम मोक्षस्थान की।।
वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम......2 ।।टेक.।।

कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व जहाँ, ऋषभदेव जी मोक्ष गए।
चक्रवर्ति भरतेश्वर ने वहाँ, रत्नजिनालय बना दिये।।
जय जय बोलो, वन्दन कर लो, उस अष्टापद धाम की।
प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम......2 ।।टेक.।।

उस पर्वत का कण-कण पावन, पूज्य सदा के लिए हुआ।
इसीलिए हमने उसकी, पूजन का थाल सजाय लिया।।
सबसे पहले आह्वानन कर, करूँ अर्चना नाथ की।
प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के, प्रथम मोक्ष स्थान की।।
वन्दे गिरिवरम्, वन्दे गिरिवरम......2 ।।टेक.।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक–

तर्ज –माई रे माई..........

ऋषभदेव निर्वाणभूमि, कैलाशगिरी को नम लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय ।

गिरि से गिरती गंगा नदि का, पावन जल ले करके।
स्वर्ण भृंग से त्रयधारा, डालूँ जिनवर के पद में।।
जन्म मरण नश जाए मेरा.........
जन्म मरण नश जाए मेरा, यही भावना भर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।। प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के मन में जब चन्दन, सी शीतलता आई।
तभी जगत का ताप शांतकर, शाश्वत शांती पाई।।
मलयागिरि चन्दन घिस करके...........
मलयागिरि चन्दन घिस करके, प्रभु का चर्चन कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पर्वत पर बालि मुनी ने, ऐसा ध्यान लगाया।
रहे अकम्प तपस्या में, तब ही अक्षयपद पाया।।
अक्षत के पुंजों से गिरि की............
अक्षत के पुजों से गिरि की, भक्ति अर्चना कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के अतिशय से अष्टापद, पुष्पों से महका था।
आज न जाने कहाँ गया वह, मोक्षधाम पहला था।।
पुष्प चढ़ा करके परोक्ष में.........
पुष्प चढ़ा करके परोक्ष में, ही सुगंधि मन भर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभदेव के पास इन्द्र जब, पूजन करने पहुँचे।
अमृतमय नैवेद्य थाल भर, प्रभु को अर्पण करते।।
अपने इस नैवेद्य में भी.........
अपने इस नैवेद्य में भी, कल्पना दिव्य की कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर को दूर भगा, प्रभु पद्मासन बैठे थे।
देव मनुज निज मोह भगाने, को आरति करते थे।।
घृत के लघु दीपक से........
घृत के लघु दीपक से ही, गिरिवर की आरति कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिप्रभू की तप सुगंधि, पूरे पर्वत पर फैली।
उनकी पूजा हेतु सुगंधित, धूप वहाँ पर महकी।।
अष्टगंध की धूप को ही.............
अष्टगंध की धूप को ही, अग्नी में दहन सब कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चउतरफा कैलाशगिरी पर, फलयुत वृक्ष झुके थे।
मानो वृषभेश्वर के पद में, वे वन्दन करते थे।।
उन जैसा फल पाने हेतू.............
उन जैसा फल पाने हेतू, फल से पूजन कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत व पुष्प चरु, दीप धूप फल लेकर।
पद अनर्घ्य मिलता है चन्दनामती अर्घ्य अर्पित कर।।
इसीलिए अब अर्घ्य थाल.........
इसीलिए अब अर्घ्य थाल, गिरिवर को अर्पण कर दो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु का सुमिरन कर लो।।प्रभू की....।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

गिरि कैलाश के ही विमल, झरने का ले नीर।
शांतीधारा मैं करूँ, मिटे मेरी भवपीर।।

शान्तये शांतिधारा।

उपवन से चुन चुन सुमन, अंजलि भरकर नाथ।
अर्पूं मैं उस गिरि निकट, मुक्त हुए जहाँ आप।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

तीन चौबीसी के अर्घ्य

–सोरठा–

जिनप्रतिमा निर्माण, कथा युगादी से बनी।
चक्रवर्ति सम्राट, रत्नमूर्तियाँ दी घनी।।

इति श्री कैलाशपर्वतस्योपरि द्वासप्ततिजिनमन्दिरस्थानेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

निर्वाणनाथ से शांतिनाथ तक, चौबिस तीर्थंकर माने।
ये भूतकाल में भरतक्षेत्र के, आर्यखंड में थे जन्मे।।
उन भगवन्तों की प्रतिमाएँ, रत्नों की बड़ी मनोहर हैं।
चरणों में अर्घ्य समर्पित कर, हो गया धन्य मन मंदिर है।।1।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतस्योपरिविराजितभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जिनप्रतिमाचरणेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऋषभदेव से महावीर तक, चौबीसों तीर्थंकर हैं।
रत्नों की प्रतिमा में हमने, माना साक्षात् जिनेश्वर हैं।।
उन सब जिनवर के चरणों में, मेरा अर्घ्य समर्पित है।
श्री वर्तमान चौबीसी के, दर्शन से मन आनन्दित है।।2।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतस्योपरिविराजितवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जिनप्रतिमाचरणेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महापद्म से अनंतवीर्य तक, चौबिस भावी जिनवर हैं।
प्रभु आदिनाथ की दिव्यध्वनि से, जाना वे क्षेमंकर हैं।।
नाना प्रकार की मणियों से, उनकी प्रतिमाएँ बनीं वहाँ।
उन पद में अर्घ्य समर्पण कर, मेरे मन में छाईं खुशियाँ।।3।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतस्योपरिविराजितभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जिनप्रतिमाचरणेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज–भवसागर अपार है........

ऊँचा सा पहाड़ है, अष्टापद गिरिराज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।टेक.।।

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, तीर्थंकर प्रभु प्रथम हुए।।तीर्थंकर......
राजपाट सब त्याग वनों में, जाकर मुनिवर प्रथम हुए।।जाकर........
मन में हुआ विचार है, नश्वर सब संसार है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।1।।

चौदह दिन की आयु रही जब, अष्टापद पर पहुँच गये।अष्टापद........
योग निरोधा कर्म नष्टकर, सिद्धालय को प्राप्त हुए।।सिद्धालय....
सुख का वह साम्राज्य है, तीन लोक सरताज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।2।।

आओ खोज करें उस गिरि की, कहाँ आज वह लुप्त हुआ।। कहाँ.......
चक्रवर्ती भरतेश्वर ने जहाँ, रत्नमूर्ति निर्माण किया।।रत्नमूर्ति...
कहते ग्रन्थ पुराण हैं, इतिहासों में नाम है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।3।।

मानी रावण ने मुनि पर वहाँ, एक बार उपसर्ग किया।।एक बार.......
मुनि ने तब जिनमंदिर रक्षा, हेतू इक पग दबा दिया।।हेतू एक.......
कथा यही विख्यात है, रोया रावण राज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।4।।

उस गिरिवर से और न जाने, कितने मुनिवर मोक्ष गए।कितने मुनिवर.......
इसीलिए ''चन्दनामती'' हम, अष्टापद की भक्ति करें।।अष्टापद की......
अर्घ्य समर्पण नाथ है, कर लेना स्वीकार है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवनिर्वाणभूमिकैलाशपर्वतसिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो भक्तजन कैलाशपर्वत, सिद्धस्थल को जजें।
हुण्डावसर्पिणिकाल के इस, तीर्थ को जो नित भजें।।
वे भक्ति के क्रम में ही इक दिन, मोक्ष को भी पाएँगे।
नहिं मुक्त हों जब तक सदा, संसार के सुख पाएँगे।।

।। इत्याशीर्वादः,पुष्पांजलिः।

अर्घावली

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है।
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है।।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै।
सातशत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै।।1।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र के विषै तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

-छन्द-घत्तानन्द-

जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनहूतैं, थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।

ॐ ह्रीं सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु, संजातक, स्वयंप्रभ, ऋषभानन, अनन्तवीर्य, सूरप्रभ, विशालकीर्ति, वज्रधर, चन्द्रानन, चंद्रबाहु, भुजंगम, ईश्वर, नेमिप्रभ, वीरसेन, महाभद्र, देवयशोऽजितवीर्येतिविंशतिविद्यमान-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परमेष्ठी (संस्कृत)

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः संगं वरं चंदनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परमेष्ठी (भाषा)

जल फल वसुवृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा।
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, हीराचंदा तुम वंदा।।

त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन नामी, अंतरयामी अभिरामी।
शिवपुर विश्रामी निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।।

ॐ ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच बालयति

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अती,
नमूँ मन वच तन धरि प्रेम, पाँचों बालयती।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीर स्वामि, श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों।।
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि-वीरांत-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलकारण

जल फल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परमगुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद-पाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु जिनालय

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाजी को करो प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दर-विद्युन्मालि-पंचमेरुसंबंधि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप जिनालय

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपतु हों।।
नन्दीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु जिनप्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यः अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्म

आठों दरब संभार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भव-आताप निवार, दस-लक्षन पूजौं सदा।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।।
मन्वादि चारण ऋद्धि-धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निवार्ण क्षेत्र

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं।।

सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाशकों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि-निवासकों।।
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती

जल चंदन अक्षत फूल चरु, अरु दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वाणी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई।।
ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जिनेन्द्र

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्रीआदिनाथ के चरण कमल पर, बलिबलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र

वसु अर्घ्य रजत के पुष्प, थाल भराय लिया।
परिपूर्ण 'ज्ञानमति' हेतु, आप चढ़ाय दिया।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र

जग गंध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघही।
कन थाल अर्घ बनाय शिव सुख, 'रामचंद्र' लहै सही।।
श्रीचंद्रप्रभु दुतिचंद को पद, कमल नखससिलगि रह्यो।
आतंक दाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो।।
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र

मिले नीर गंधादि चाँदी कुसुम भी, चढ़ाऊँ तुम्हें अर्घ्य हो 'ज्ञानमति' भी।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज-तनुज-पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे, अर्घ चढ़ाये मंगल गाय।
'बखत रतन' के तुम ही साहिब, दीजे शिवपुर राज कराय।।
शांतिनाथ पंचम चक्रेश्वर, द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे, रोग शोक दुख दारिद जाय।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र

जलफल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्टम छिति के राज करन को, जजों अंग वसु नाय।।
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय।।दाता.।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र

नीर गंध अक्षतान् पुष्प चारू लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तें जजीजिये।।

पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर जिनेन्द्र

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुणगाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऋषि मण्डल

जल फलादिक द्रव्य लेकर, अर्घ सुन्दर कर लिया।
संसार रोग निवार भगवन्, वारि तुम पद में दिया।।
जहाँ सुभग ऋषिमंडल विराजैं, पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख, स्वप्न में दुख नहिं कदा।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वोपद्रव-विनाशन-समर्थाय, रोग-शोक-सर्व-संकटहराय, सर्वशांतिपुष्टिकराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थंकर, अष्ट वर्ग, अरिहंतादि पंचपद, दर्शन-ज्ञान-चारित्र, चतुर्णिकाय देव, चार प्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्ट ऋद्धि संयुक्त ऋषि, बीस चार सूर, तीन ह्रीं, अर्हंतबिम्ब, दशदिक्पाल यंत्र संबंधि परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अर्हंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरन, शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दया-मय पूजूँ सदा।
जजूँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।

त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजत भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी, पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जपि, होय पति शिव गेह के।।6।।

-दोहा-

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्वपूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंत जी सिद्ध जी आचार्य जी उपाध्याय जी सर्वसाधु जी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि-दशलाक्षणिकधर्माय नमः, सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जलके विषैं थलके विषैं आकाशके विषैं गुफाके विषैं पहाड़के विषैं नगर-नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक-मध्यलोक-पाताललोकविषैं विराजमान कृत्रिम-अकृत्रिम जिन-चैत्यालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः, विदेहक्षेत्रे विहरमान बीस-तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र-संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप-संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधि-अस्सी-जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, टोड़ी जी जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीर जी पद्मपुर तिजारा आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्रीमंतंभगवन्तंकृपावन्तं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यन्तंचतुर्विंशति-तीर्थंकर-परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीप भरतक्षेत्रे आर्यखंडे.........नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे.... मासे शुभे........पक्षे शुभ.......तिथौ.......वासरे मुनि-आर्यिकानां श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद-प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजैं।।1।।
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।2।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।
शांतिजिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।4।।
पूजें जिन्हें मुकुट-हार किरीट लाके,
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहु शांति सदा अनूप।।5।।
संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांति को दे।।6।।
होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पे, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।।
होवे चोरी न मारी, सुसमय बरतै हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।7।।

—दोहा—

घाति कर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज,
शांति करें ते जगत में, वृषभादिक जिनराज।।8।।
शास्त्रों को हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।9।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौलौं न पाऊँ।।10।।

—आर्य्या छन्द—

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहौ प्रभु जब लौं, पाया न मुक्ति पद मैंने।।11।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा, करि पुनि छुड़ाहु भवदुख से।।12।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर पाऊँ, तव शरण चरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।13।।

(तीन बार शांतिधारा देवें तथा नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

— विसर्जन पाठ—

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तें परमगुरु, सो सब पूरन होय।।1।।
पूजनविधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करो भगवान।।2।।
मंत्र-हीन धन-हीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।
आये जो-जो देवगण, पूजें भक्ति प्रमाण।
सो अब जावहु कृपा कर, अपने-अपने थान।।4।।

भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक्प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ।।1।।

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्वबोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरै-रुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ।।2।।

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।3।।

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र शशांक-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतु-मलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।।4।।

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मविचार्य्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाऽभ्येति किं निज-शिशोः परि-पालनार्थम्।।5।।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास - धाम,
त्वद्भक्ति-रेव-मुखरी-कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निकरैक-हेतु।।6।।

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम् ।

आक्रान्त-लोक-मलिनील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम् ।।7।।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ताफल-द्युति-मुपैति ननूद-बिंदुः।।8।।

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकास-भांजि।।9।।

नात्यद्भुतं भुवन - भूषण - भूतनाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टु - वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।10।।

दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेष-विलोकनीयं,
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ।।11।।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रि - भुवनैक - ललाम - भूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समान-मपरं न हि रूपमस्ति।।12।।

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरगनेत्र-हारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रित-योपमानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम् ।।13।।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक-कला कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।

ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर - नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ।।14।।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

निर्धूम - वर्त्ति - रपवर्जित - तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः।।16।।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महा - प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र लोके।।17।।

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं।
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कान्ति,
विद्योतयज्-जगदपूर्व-शशांक-बिम्बम्।।18।।

किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्-जलधरैर्जल-भारनम्रैः।।19।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणा-कुलेऽपि।।20।।

मन्ये वरं हरि - हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।

किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि।।21।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्-
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम् ।।22।।

त्वामा-मनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्
त्वामेव सम्य-गुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र पन्थाः।।23।।

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माण-मीश्वर-मनन्त-मनंग केतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकं,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधा-
त्त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात् ।
धातासि धीर शिव-मार्ग-विधे-र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।

तुभ्यं नम-स्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि-शोषणाय।।26।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश।
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद-पीक्षितोसि।।27।।

उच्चैर-शोक-तरु-संश्रित-मुन्मयूख-
माभाति रूप-ममलं भवतो नितान्तम्।

स्पष्टोल्लसत्-किरणमस्त-तमो-वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति।।28।।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका-वदातम् ।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशु-लता-वितानं,
तुंगोदयाद्रि - शिरसीव सहस्र - रश्मेः।।29।।

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक-शुचि-निर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुर-गिरेरिव शात-कौम्भम् ।।30।।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्धर्म-राज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्-ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात,
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमा-क्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकर-निरन्तर-भूरि-संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम्।।34।।

स्वर्गा-पवर्ग-गममार्ग-विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म तत्त्व-कथनैक-पटुस्-त्रिलोक्याः।

दिव्य-ध्वनिर्-भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

उन्निद्र - हेम - नवपंकजपुंज - कान्ती,
पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखा-भिरामौ।।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधा परि-कल्पयन्ति।।36।।

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोप-देशन विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्ध-कारा,
तादृक्कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोपि।।37।।

श्च्योतन्-मदा-विल-विलोल-कपोल-मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभ - मिभ - मुद्धत - मापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा-श्रितानाम्।।38।।

भिन्नेभ-कुम्भ-गल-दुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमिभागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणा-धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते।।39।।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वन्हि-कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्वल-मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघित्सुमिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्य-शेषम्।।40।।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंकस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः।।41।।

वल्गत्तुरंग - गज - गर्जित - भीम - नाद-
माजौ बलं बलवतामपि भू-पतीनाम्।

उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्-तम इवाशु भिदा-मुपैति।।42।।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्-पाद-पंकज-वना-श्रयिणो लभन्ते।।43।।

अम्भो-निधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ।
रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति।।44।।

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुपगताश्च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद - पंकज - रजोमृतदिग्ध - देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर-ध्वज-तुल्य-रूपाः।।45।।

आपाद-कण्ठ-मुरुश्रृंखल-वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः।
त्वन्नाम-मन्त्र मनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति।।46।।

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश-मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमान-धीते।।47।।

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्-निबद्धां
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पां।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं-
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

-दोहा-

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।1।।

-चौपाई-

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चंपापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वंदौं भाव-भगति उर धार।।2।।

चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसम्मेद जिनेसुर बीस, भावसहित वंदौं निश-दीस।।3।।

वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, वंदौं भावसहित कर जोड़ि।।4।।

श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
संबु-प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय।।5।।

रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोडि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि वंदौं निरधार।।6।।

पांडव तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्रीशत्रुंजय-गिरि के सीस, भाव सहित वंदौं निश-दीस।।7।।

जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँ काल।।8।।

राम हनू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान।।9।।

नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि-शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस।।10।।

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास।।11।।

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोड़ि वंदौं भव पार।।12।।
बड़वानी बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भव-सायर तर्ण।।13।।
सुवरण-भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि वर शिखर मंझार।
चेलना-नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास।।14।।
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वंदौ नित तहाँ।15।।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्ति मंझार, ते वंदौं नित सुरत संभार।।16।।
अचलापुर की दिश ईसान, जहाँ मेंढगिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय।।17।।
वंसस्थल वनके ढिग होय, पच्छिम दिशा कुंथुगिरि सोय।।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।।18।।
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँचसौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान , वंदन करूँ जोड़ जुग पान।।19।।
समवसरण श्रीपार्श्व-जिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज।।20।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजै तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय।।21।।
संवत सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल।।22।।

श्री ऋषभदेव स्तुति

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

हे आदिनाथ! हे आदीश्वर! हे ऋषभ जिनेश्वर! नाभिललन!
पुरुदेव! युगादि पुरुष ! ब्रह्मा, विधि और विधाता मुक्तिकरण।।
मैं अगणित बार नमूँ तुमको, वन्दूँ ध्याऊँ गुणगान करूँ।
स्वात्मैक परम आनन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करूँ।।1।।
आषाढ़ बदी दुतिया तिथि थी, मरुदेवी गर्भ पधारे थे।
श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ चैतबदी नवमी तिथि थी, भगवान यहाँ जब थे जन्में।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, अभिषेक किया था इन्द्रों ने।।2।।
वो घड़ी धन्य थी धन्य दिवस, धन धन्य अयोध्या नगरी थी।
श्री नाभिराज भी धन्य तथा, तब धन्य प्रजा भी सगरी थी।।
प्रभु ने असि मसि आदिक किरिया, उपदेशी आदि विधाता थे।
थे युग के आदिपुरुष ब्रह्मा, श्रावक मुनि मार्ग विधाता थे।।3।।
थे कनक वर्ण धनु पंच शतक, तनु वे युग के अवतारी थे।
आयू चौरासी लाख पूर्व, धारक वृष लक्षण धारी थे।।
सब परिग्रह ग्रंथी को तजकर, निर्ग्रंथ दिगम्बर रूप धरा।
वह चैत्र वदी नवमी शुभ थी, जिस दिन प्रभु ने कचलोंच करा।।4।।
षट् मास योग में लीन रहे, लंबित भुज नासादृष्टी थी।
निज आत्म सुधारस पीते थे, तन से बिल्कुल निर्ममता थी।।
फिर ध्यान समाप्त किया प्रभु ने, आहार विधी बतलाने को।
भवसिंधू में डूबे जन को, मुनिमार्ग सरल समझाने को।।5।।
षट् मास भ्रमण करते-करते, प्रभु हस्तिनागपुर में आये।
सोमप्रभ नृप श्रेयांस तभी, आहार दान दे हर्षाये।।
रत्नों की वर्षा हुई गगन से, सुरगण मिल जयकार किया।
धन-धन्य हुई वैशाख सुदी, अक्षय तृतिया आहार हुआ।।6।।
जब आप क्षपक श्रेणी चढ़कर, घाती पर ध्यान चक्र छोड़ा।
एकादशि फाल्गुन कृष्णा थी, केवलश्री से नाता जोड़ा।।

त्रिभुवन में ज्ञान लता फैली, भविजन को छाया सुखद मिली।
फिर माघ कृष्ण चौदश के दिन, मुक्तिश्री प्रभु के गले मिली।।7।।

क्रोधादिक रिपु को जीत प्रभो, स्वात्मा से जनित सुखामृत को।
पीकर अत्यर्थतया निशदिन, भव से सु निकाला आत्मा को।।
त्रिभुवन के मस्तक पर जाकर, अब तक व अनंते कालों तक।
ठहरेंगे वे पुरुदेव! मुझे, शुभ "ज्ञानमती" श्री देवें झट।।8।।

श्री ऋषभदेव चालीसा

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

—दोहा—

सिद्धप्रभू को नमन कर, सिद्ध करूँ सब काम।
अरिहन्तों के नमन से, पाऊँ आतम धाम।।1।।
पंचकल्याणक से सहित, तीर्थंकर अरिहन्त।
अष्टकर्म को नष्ट कर, बने सिद्ध भगवन्त।।2।।
उनमें ही प्रभु ऋषभ का, चालीसा सुखकार।
पढ़ो सुनो सब भव्यजन, हो जाओ भव पार।।3।।

—चौपाई—

जय हो आदिनाथ परमेश्वर, जय हो ब्रह्मा विष्णु महेश्वर।।1।।
हो जयवंत अयोध्या तीरथ, जिनवर जन्मभूमि की कीरत।।2।।
सुषमादुषमा तृतिय काल था, भोगभूमि का भी प्रयाण था।।3।।
नाभिराय अंतिम कुलकर थे, कर्मभूमि के वे कुलधर थे।।4।।
सर्वप्रथम इन्द्रों ने आकर, नाभिराय का ब्याह रचाकर।।5।।
कर्मभूमि प्रारंभ किया था, नगरी में आनन्द किया था।।6।।
शुभ विवाह की परम्परा यह, चली तभी से इस धरती पर।।7।।
राजमहल सर्वतोभद्र था, इक्यासी खन का सुन्दर था।।8।।
नाभिराय के उसी महल में, मरुदेवी माँ के आंगन में।।9।।
रत्नवृष्टि की थी कुबेर ने, पन्द्रह महिने तक धनेश ने।।10।।
थी आषाढ़ वदी दुतिया तिथि, मरुदेवी के गर्भ बसे प्रभु।।11।।

चैत्र कृष्ण नवमी शुभ तिथि में, आदिनाथ तीर्थंकर जन्मे।।12।।
तीन लोक में शांति छा गई, अवध में नूतन क्रान्ति आ गई।।13।।
देवों के संग खेल खेलकर, बड़े हो गये ऋषभ जिनेश्वर।।14।।
स्वर्गों से ही भोजन आता, समझ नियोग दुखी नहिं माता।।15।।
यौवन में प्रभु ब्याह रचाया, यशस्वती व सुनन्दा पाया।।16।।
इक सौ एक पुत्र दो पुत्री, उनमें प्रथम भरत थे चक्री।।17।।
जिनसे भारत देश कहाया, छहः खण्डों में ध्वज लहराया।।18।।
इक दिन ऋषभदेव की सभा में, नृत्य दिखाया नीलांजना ने।।19।।
जग वैभव असार बतलाया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।20।।
वह भी चैत्र कृष्ण नवमी थी, जब जिनवर ने दीक्षा ली थी।।21।।
वह नगरी प्रयाग कहलाई, वटतरुतल प्रभु दीक्षा पाई।।22।।
एक वर्ष उनतालिस दिन में, प्रथम आहार हस्तिनापुर में।।23।।
सोमप्रभ श्रेयांस महल में, पंचाश्चर्य रतन बरसे थे।।24।।
अक्षय तृतिया पर्व तभी से, मना रहे सब लोग खुशी से।।25।।
एक हजार वर्ष तक तप कर, आत्मा में कैवल्य प्रगट कर।।26।।
समवसरण लक्ष्मी को पाया, जग को मोक्षमार्ग बतलाया।।27।।
वह थी फाल्गुन वदि ग्यारस तिथि, केवलज्ञान कल्याणक शुभ तिथि।।28।।
पुरिमतालपुर के उद्यान में, समवसरण में मुनि प्रधान थे।।29।।
अष्टापद गिरि पर जा करके, योग निरोध किया जिनवर ने।।30।।
माघ कृष्ण चौदस शुभ तिथि में, कर्म अघाती नष्ट किए थे।।31।।
मोक्षधाम को प्राप्त कर लिया, शिवलक्ष्मी का वरण कर लिया।।32।।
सब पुत्रों ने दीक्षा लेकर, प्राप्त किया शिवधाम हितंकर।।33।।
ब्राह्मी-सुंदरी बनीं आर्यिका, गणिनी पद की प्रथम धारिका।।34।।
यह सब है इतिहास पुराना, वर्तमान को है बतलाना।।35।।
गणिनी माता ज्ञानमती की, प्रबल प्रेरणा प्राप्त हो गई।।36।।
ऋषभदेव प्रभु का जन्मोत्सव, खूब मनाओ महामहोत्सव।।37।।
जैनधर्म प्राकृतिक बताओ, सार्वभौम सिद्धांत सुनाओ।।38।।
और नहीं मैं कुछ भी चाहूँ, जनम जनम प्रभु दर्शन पाऊँ।।39।।
मेरी आतम निधि मिल जावे, निज गुण कीर्ति ध्वजा फहराए।।40।।

–दोहा–

दुतिया कृष्ण अषाढ़ की, कृति चालीसा ख्यात।
वीर संवत पच्चीस सौ, तेइस तिथि विख्यात।।1।।
अज्ञ आर्यिका चन्दनामती रचित गुणगान।
मुझमें गुण विकसित करें, दे त्रयरत्न महान।।2।।
चालीस दिन तक जो करे, यह चालीसा पाठ।
तन मन पावन वो करे, लहे जगत का ठाठ।।3।।

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ वंदना

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

–शेर छन्द–

जय जय जिनेन्द्र जन्मभूमियाँ प्रधान हैं।
जय जय जिनेन्द्र धर्म की महिमा महान है।।
जय जय सुरेन्द्रवंद्य ये धरा पवित्र हैं।
जय जय नरेन्द्र वंद्य ये तीरथ प्रसिद्ध हैं।।1।।
मिश्री से जैसे अन्न में मिठास आती है।
वैसे ही पवित्रात्मा तीरथ बनाती हैं।।
हो गर्भ जन्म दीक्षा व ज्ञान जहाँ पर।
वे तीर्थ कहे जाते हैं आज धरा पर।।2।।
जिनवर जनम से पहले वहाँ इन्द्र आते हैं।
नगरी को सुसज्जित कर उत्सव मनाते हैं।।
सुंदर महल सजाया जाता है वहाँ पर।
जिनवर के पिता-माता रहते हैं वहाँ पर।।3।।
पहली जनमभूमि है नगरि तीर्थ अयोध्या।
शाश्वत जनमभूमी प्रभू की कीर्ति अयोध्या।।
इस युग में किन्तु पाँच जिनेश्वर वहाँ जन्मे।
वृषभाजित अभीनंदन सुमति अनंत वे।।4।।
श्रावस्ती ने संभव जिनेन्द्र को जनम दिया।
कौशाम्बी में श्रीपद्मप्रभू ने जनम लिया।।

वाराणसी सुपार्श्व पार्श्व से पवित्र है।
श्रीचन्द्रपुरी चन्द्रप्रभू से प्रसिद्ध है।।5।।
काकन्दी को सौभाग्य मिला पुष्पदंत का।
भद्दिलपुरी जन्मस्थल शीतल जिनेन्द्र का।।
श्रेयाँसनाथ से पवित्र सारनाथ है।
जिनशास्त्रों में जो सिंहपुरी से विख्यात है।।6।।
श्रीवासुपूज्य जन्मभूमि चम्पापुरी है।
कम्पिल जी विमलनाथ जिनकी जन्मभूमि है।।
तीरथ रतनपुरी है धर्मनाथ की भूमी।
रौनाही से प्रसिद्ध है वह आज भी भूमी।।7।।
श्रीशांति कुंथु अरहनाथ हस्तिनापुर में।
जन्मे जिनेन्द्र तीनों त्रयलोक भी हरषे।।
मिथिलापुरी में मल्लि व नमिनाथ जी जन्मे।
तीर्थेश मुनिसुव्रत जी राजगृही में।।8।।
है जन्मभूमि शौरीपुर नेमिनाथ की।
महावीर से कुण्डलपुरी नगरी सनाथ थी।।
चौबीस जिनवरों की जन्मभूमि को नमूँ।
कर बार-बार वंदना सार्थक जनम करूँ।।9।।
श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
कई जन्मभूमियों में नई ज्योति तब जली।।
उन प्रेरणा से जन्मभूमि वन्दना रची।
प्रभु जन्मभूमि तीर्थों की भक्ति मन बसी।।10।।
प्रभु बार-बार मैं जगत में जन्म ना धरूँ।
इक बार जन्मधार बस जीवन सफल करूँ।।
इस भाव से ही जन्मभूमि वन्दना करूँ।
निज भाव तीर्थ प्राप्ति की अभ्यर्थना करूँ।।11।।
यह भक्तिसुमन थाल है गुणमाल का प्रभु जी।
अर्पण करूँ है भावना यात्रा करूँ सभी।।
बस ''चन्दनामती'' की इक आश है यही।
संयम की ही परिपूर्णता जीवन की हो निधी।।12।।

पंचपरमेष्ठी की आरती

इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।

पहली आरती श्री जिनराजा, भव-दधि पार उतार जिहाजा।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।।

दूसरी आरति सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटै भव फेरी।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।।

तीसरी आरती सूर मुनीन्दा, जन्म-मरण दुख दूर करिन्दा।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।।

चौथी आरती श्री उवज्झाया, दर्शन देखत पाप पलाया।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजै।।

पांचवी आरति साधु तिहारी, कुमति-विनाशन शिव अधिकारी।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।।

छट्ठी ग्यारह प्रतिमा धारी, श्रावक वंदों आनन्द कारी।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।।

सातवीं आरति श्री जिनवाणी, 'द्यानत' सुरग-मुकति सुख दानी।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।।

संध्या करके आरति कीजे अपना जनम सफल कर लीजे।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।।

सोने का दीप कपूर की बाती, जगमग ज्योति जले सारी राती।
इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजे।।

पंचपरमेष्ठी एवं चौबीस तीर्थंकर की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज - चांदनपुर के गाँव में बुला ले सांवरिया..........

**घृत दीपक का थाल ले, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।
पाँचों परमेष्ठी की एवं चौबीसों जिनवर की।।घृत दीपक.।।टेक.।।**

**समवसरणयुत अरिहंतों की, सिद्धशिला के सिद्धों की-2
भवदुख नाशन हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।1।।**

**परमेष्ठी आचार्य उपाध्याय, साधु मोक्षपथगामी हैं-2
रत्नत्रय की प्राप्ति हित, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।2।।**

**मुनिवर ही तो कर्म नाश, अरिहंत-सिद्ध पद पाते हैं-2
कर्म विनाशन हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।3।।**

**चौबिस जिन जहाँ जन्मे एवं, जहाँ से मोक्ष पधारे हैं-2
उन सब पावन तीर्थ की, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।4।।**

**देव-शास्त्र-गुरु तीनों जग में, तीन रतन माने हैं-2
आतम निधि के हेतु ही, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।5।।**

**तीन लोक के जिनमन्दिर, कृत्रिम-अकृत्रिम जितने हैं-2
उन सबकी ''चंदनामती'', उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।6।।**

**पाँचों परमेष्ठी की एवं चौबीसों जिनवर की-2
घृत दीपक का थाल ले, उतारूँ आरतिया, मैं तो पाँचों परमेष्ठी की।।7।।**

भगवान श्री ऋषभदेव की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय वृषभेश प्रभो, स्वामी जय वृषभेश प्रभो ।
पंचकल्याणक अधिपति, प्रथम जिनेश विभो।।ॐ जय.।।टेक.।।

वदि आषाढ़ दुतीया, मात गरभ आए। स्वामी.......।
नाभिराय मरुदेवी के संग, सब जन हरषाए।।ॐ जय.।।1।।

धन्य अयोध्या नगरी, जन्में आप जहाँ।स्वामी.......।
चैत्र कृष्ण नवमी को, मंगलगान हुआ।।ॐ जय.।।2।।

कर्मभूमि के कर्ता, आप ही कहलाए।स्वामी ....।
असि मसि आदि क्रिया बतलाकर, ब्रह्मा कहलाए।।ॐ जय.।।3।।

नीलांजना का नृत्य देखकर, मन वैराग्य हुआ।स्वामी......।
चैत्र कृष्ण नवमी को, दीक्षा धार लिया।।ॐजय.।।4।।

सहस्र वर्ष तप द्वारा, केवल रवि प्रगटा।स्वामी......।
फाल्गुन कृष्ण सुग्यारस, समवसरण बनता।।ॐ जय.।।5।।

माघ कृष्ण चौदस को, मोक्ष धाम पाया।स्वामी......।
गिरि कैलाश पे जाकर, स्वातम प्रगटाया।।ॐजय.।।6।।

ऋषभदेव पुरुदेव प्रभू की, आरति जो करते।स्वामी......।
क्रम क्रम से ''चंदनामती'' वे, पूर्ण सुखी बनते।।ॐ जय.।।7।।

भगवान ऋषभदेव निर्वाणभूमि

कैलाश पर्वत की मंगल आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मैं तो............

मैं तो आरती उतारूँ रे, कैलाश गिरिवर की।
जय जय कैलाशगिरि, जय जय जय-2।।टेक.।।

युग की आदी में प्रभु ऋषभदेव, इस गिरि पर पहुँचे।इस गिरि...
अपने योगों का करके निरोध, मुक्तिपुरी पहुँचे।। मुक्तिपुरी......
इन्द्रों ने झूम-झूम, नृत्य किया घूम-घूम, उत्सव मनाया रे,
हो निर्वाण उत्सव मनाया रे।मैं तो..............।।1।।

चक्रवर्ती भरत ने वहाँ, मंदिर बनवाए। मंदिर...........
उनके अंदर रतन प्रतिमा, उन्होंने पधराईं।।उन्होंने.......
भक्ती का रंग था, वैभव के संग था, खुशियाँ मनाई थीं,
उन्होंने खुशियाँ मनाई थीं।।मैं तो ....।।2।।

वैसी प्रतिमा गिरी पर आज, दिखती हैं कलियुग में। दिखती....
आरती का करो खूब ठाठ, मानो है सतयुग यह।। मानो है.....
''चंदनामति'' भक्ति करूँ, आतम में शक्ति भरूँ, पर्वत निहारूँ रे,
हो प्यारा-प्यारा पर्वत निहारूँ रे।।मैं तो.........।।3।।